अन्नपूर्णा चालीसा

॥ दोहा ॥

विश्वेश्वर-पदपदम की

रज-निज शीश-लगाय।

अन्नपूर्णे तव सुयश

बरनौं कवि-मतिलाय॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

॥ चौपाई ॥

नित्य आनंद कारिणी माता,

वर-अरु अभय भाव प्रख्याता।

जय। सौंदर्य सिंधु जग-जननी,

अखिल पाप हर भव-भय हरनी।

श्वेत बदन पर श्वेत बसन पुनि,

संतन तुव पद सेवत ऋषिमुनि।

काशी पुराधीश्वरी माता,

माहेश्वरी सकल जग-त्राता।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

बृषभारूढ़ नाम रुद्राणी,

विश्व विहारिणी जय। कल्याणी ।

पदिदेवता सुतीत शिरोमनि,

पदवी प्राप्त कीहन गिरि-नंदिनी।

पति-विछोह दुख सहि नहि पावा,

योग अग्नि तब बदन जरावा।

देह तजत शिव-चरण सेनहू,

राखेहु जाते हिमगिरी-गेहू।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

प्रकटी गिरिजा नाम धरायो,

अति आनंद भवन महँ छायो।

नारद ने तब तोहिं भरमायहु,

ब्याह करने हित पाठ पढ़ायहु।

ब्रह्मा वरुण कुबेर गनाये,

देवराज आदिक कहि गाय।

हिन्दीपथ.कॉम

सब देवन को सुजस बखानी,

मतिपलटन की मन महँ ठानी।

अचल रहीं तुम प्रण पर धन्या,

कीहनी सिद्ध हिमाचल कन्या।

निज कौ तव नारद घबराये,

तब प्रण-पूरण मंत्र पढ़ाये।

करन हेतु तप तोहिं उपदेशेउ,

संत-बचन तुम सत्य परेखेहु।

गगनगिरा सुनि टरी न टारे,

ब्रहमा, तब तुव पास पधारे।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

कहुउ पुत्रि वर माँगु अनूपा,

देहुँ आज तुव मति अनुरूपा।

तुम तप कीह्न अलौकिक भारी,

कष्ट उठायेहु अति सुकुमारी।

अब संदेह छाँड़ि कछु मोसों

है सौगंध नहीं छल तोसों।

करत वेद विद ब्रह्मा जानहु,

वचन मोर यह सांचो मानहु।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

तजि संकोच कहहु निज इच्छा,

देहौं मैं मन मानी भिक्षा।

सुनि ब्रह्मा की मधुरी बानी,

मुखसों कछु मुसुकायि भवानी।

बोली तुम का कहहु विधाता,

तुम तो जगके स्तरष्टाधाता।

मम कामना गुप्त नहिं तोंसों,

कहवावा चाहहु का मोसों।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

इज्ञ यज्ञ महँ मरती बारा,

शंभुनाथ पुनि होहिं हमारा।

सो अब मिलहिं मोहिं मनभाय,

कहि तथास्तु विधि धाम सिधाये।

तब गिरिजा शंकर तब भयऊ,

फल कामना संशय गयऊ।

चन्द्रकोटि रवि कोटि प्रकाशा,

तब आनन महँ करत निवासा।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

माला पुस्तक अंकुश सोहै,

करमँह अपर पाश मन मोहे।

अन्नपूर्णे। सदपूर्णे,

अज-अनवद्य अनंत अपूर्णे।

कृपा सगरी क्षेमंकरी माँ,

भव-विभूति आनंद भरी माँ।

कमल बिलोचन विलसित बाले,

देवि कालिके । चण्डि कराले।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

तुम कैलास मांहि है गिरिजा,

विलसी आनन्दसाथ सिंधुजा।

स्वर्ग-महालक्ष्मी कहलायी,

मर्त्यलोक लछमी पदपायी।

विलसी सब मँह सर्व सरूपा,

सेवत तोहिं अमर पुर-भूपा।

जो पढ़िहहिं यह तुव चालीसा,

फल पइहहिं शुभ साखी ईसा।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

प्रात समय जो जन मन लायो,

पढ़िहहिं सुरुचि अधिकायो।

स्त्री कलत्र पनि मित्र पुत्र युत,

परमैश्वर्य लाभ लहि अद्भुत।

राज विमुखको राज दिवावै

जस तेरो जन - न-सुजस बढ़ावै।

हिन्दीपथ.कॉम

पाठ महा मुद मंगल दाता,

भक्त मनो वांछित निधिपाता।

॥ दोहा ॥

जो यह चालीसा सुभग,

पढ़ि नावहिंगे माथ।

तिनके कारज सिद्ध सब

साखी काशी नाथ॥

हिन्दीपथ.कॉम

अन्य चालीसा पढ़े

- हनुमान चालीसा
- शिव चालीसा
- दुर्गा चालीसा
- शनि चालीसा
- गणेश चालीसा
- लक्ष्मी चालीसा
- राम चालीसा
- विष्णु चालीसा
- गायत्री चालीसा
- काली चालीसा
- भैरव चालीसा
- सरस्वती चालीसा
- कृष्ण चालीसा
- सूर्य चालीसा
- महावीर चालीसा
- साईं चालीसा
- महाकाली चालीसा
- तुलसी चालीसा
- बगलामुखी चालीसा
- गोरख चालीसा
- गोपाल चालीसा
- नवग्रह चालीसा
- रविदास चालीसा
- बाला जी चालीसा
- महालक्ष्मी चालीसा
- पार्वती चालीसा

- खाटू श्याम चालीसा
- रामदेव चालीसा
- राधा चालीसा
- विश्वकर्मा चालीसा
- पितर चालीसा
- बटुक भैरव चालीसा
- जाहरवीर चालीसा
- गिरिराज चालीसा
- नर्मदा चालीसा
- प्रेतराज चालीसा
- संतोषी चालीसा
- गंगा चालीसा
- शारदा चालीसा
- ललिता चालीसा
- अन्नपूर्णा चालीसा
- श्री वैष्णो चालीसा
- परशुराम चालीसा
- विन्ध्येश्वरी चालीसा
- ब्रह्मा चालीसा
- शाकम्भरी चालीसा
- राणी सती चालीसा
- गंगाराम चालीसा
- बालक नाथ चालीसा
- मोहन राम चालीसा
- शीतला चालीसा